आराधना

मारीशस में आयोजित
संस्कृत-सम्मेलन
के
अवसर पर
देववाणी-परिषद्, दिल्ली की ओर से भेंट

१३ मार्च १९८४ ई०

देववाणी-परिषद्, दिल्ली

आर ६, वाणी विहार:, नई दिल्ली-११० ०५९

आमुख

वि० सं २०४० की कार्तिक पूर्णिमा तदनुसार २०-११-१९८३ ई० को 'देववाणी-परिषद, दिल्ली' के तत्त्वावधान में 'आर ६, वाणी-विहार, नयी दिल्ली - ११००५९ (भारत), में मारिशस के संस्कृतानुरागियों— श्री सुरेश रामवर्ण, श्री परमानन्द रामलखन तथा श्री दामोदर तुलसी—का अभिनन्दन किया गया था। उसी अवसर पर 'अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनों से अपेक्षाएं' विषय पर विचार-गोष्ठी भी हुई थी जिसका उद्घाटन करते हुए भारत सरकार के शिक्षा तथा संस्कृति मन्त्रालय में संयुक्त परामर्शदाता डा० रामकरण शर्मा ने लोक जीवन में रमे हुए संस्कृत-तत्त्व को जगत् के सम्मुख रखने की आवश्यकता प्रतिपादित की थी'। इस अवसर पर भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय में संस्कृत के उपपरामर्शदाता डा० शास्त्रपुरम् रामकृष्ण स्वामिनाथन् ने अल्प संस्कृतज्ञ या असंस्कृतज्ञों के लिए ऐसी पुस्तकों आवश्यकता भी रेखांकित की थी जिनमें संस्कृत पाठ्य को रोमन लिपि में भी दिया गया हो तथा उसका भाव हिन्दी के साथ अंग्रेजी में भी दिया गया हो। 'देववाणी-परिषद् दिल्ली' के महासचिव रमाकान्त शुक्ल ने इस अवसर पर भारत और मौरीशस के सांस्कृतिक चिन्तन के आदान-प्रदान के लिए 'भारत-मौरीशस-सांस्कृतिक-मैत्री-परिषद्' नामक मंच के गठन का भी प्रस्ताव रखा था जिसे सभी ने स्वीकार किया तथा इन पंक्तियों के लेखक को इस मंच के गठन का दायित्व सौंपा गया था।

मुझे प्रसन्नता है कि उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्त्यर्थ देववाणी-परिषद् 'आराधना' नामक लघु पुस्तिका का प्रकाशन कर रही है। इस पुस्तिका से लोक-जीवन में रमे संस्कृत-तत्त्व का परिचय भी सुधी जनों को होगा। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने में मौरीशस सनातन धर्म टैम्पल्स फेडरेशन के सचिव श्री सुरेश रामबर्ण, प्रधान पुरोहित आचार्य रवीन्द्र नागर तथा श्री अनिल बच्चू ने विशेष परिश्रम किया है। अतः ये विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

मौरीशस में १३ से १७ मार्च १९८४ तक आयोजित 'संस्कृत सम्मेलन' में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए डा० स्वामिनाथन् और देववाणी-परिषद् के महासचिव डा० रमाकान्त शुक्ल भी पधार रहे हैं। ये सम्मेलन के समायोजकों को इस पुस्तक की प्रतियाँ भेंट करके जिस सांस्कृतिक सद्भावना का सूत्रपात कर रहे हैं वह उत्तरोत्तर पुष्ट हो, इसकी कामना करता हूँ तथा इसके पाठकों के लिए अनन्त शुभकामनाएं समर्पित करता हूँ।

मण्डन मिश्र
निदेशक
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

१३ मार्च १९८४
नयी दिल्ली-११००२७

प्रातः स्मरणम्

Morning Prayer

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ।।

Karāgre vasate Lakṣmīḥ Karamadhye Sarasvatī
Karamūle Tu Govindaḥ Prabhāte Kara Darśnam.

गुरु-स्तुति

Guru Stuti

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

Gurur Brahma, Gurur Vishnur Gurur Devo Maheśvaraḥ
Guruḥ Sakṣhat Parabrahma, Tasmai Śhrī Gurave namaḥ.

गायत्री मन्त्र

Gayatri Mantra

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

Om bhūr bhuvaḥ svaḥ tat saviturvareṇyam bhargo devasya dīmahi dhiyo yo naḥ pracodayat.

असतो मा सद् गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।।

Asato mā Sad Gamaya
Tamaso mā Jyotirgamaya
Mṛtyormā Amṛtam Gamaya.

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।

Tvameva mātā ca pitā tvameva
Tvameva bandhuśca sakhā tvameva
Tvameva vidyā draviṇam tvameva
Tvameva sarvam mama Deva Deva.

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।

Sarve bhavantu sukhinaḥ, sarve santu Nirāmayāḥ
Sarve bhadrāṇi, paśyantu mā kaścid Duḥkha bhag bhavet.

शान्तिपाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वी, शान्तिरापः शान्तिरोषधयः, शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओ३म् ।

शान्तिपाठ प्रत्येक शुभकार्य की प्रार्थना पर (अन्त में) किया जाता है।

Oṁ dyauḥ śāntirantarikṣham śāntiḥ pṛthvī śāntirapaḥ śāntiroṣadhayaḥ śāntir vanaspatayaḥ śāntir viśvedevāḥ śāntirbrahma śāntiḥ sarvam śāntiḥ śāntireva śāntiḥ sā mā śāntiredhi.

Om śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ Om.

मन्दिर प्रवेश स्तुति :

Mandir Pravesh Stuti

While entring the premises of the shivala

आकाशात् पतितं तोयं, यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवम् प्रति गच्छति ।।

Ākāshāt Patitam Toyam, Yathā Gachhati Sāgaram
Sarva Deva Namaskāraḥ, Keśvam Prati Gachhati.

It is customary with the Hindus to revere living as well as non-living beings. They believe in the five orders of beings in an ascending scale in this world. They are (1) Material objects (2) Living plants (3) Conscious animals (4) Intelligent men (5) God in bliss.

At one end of the scale are lifeless objects which consist entirely of matter and in which the spirit is dormant. At the other end there is God who is a perfect spirit and in whom matter is entirely dormant. Between the two extremes, we have plants, animals and men. Whatever be the case, God pervades the whole universe. He is both immanent and transcendant. That is why when the devotee enters the premises of a temple, he utters the above mantra.

हिन्दुओं की यह परम्परा रही है कि जड़ वस्तुओं का भी सजीव प्राणी के समान आदर किया जाता है। इसी दृष्टि से जड़-चेतन प्राणी मात्र को निम्नलिखित पांच श्रेणियों में रखा गया है— (१) भौतिक वस्तु (२) वनस्पति (३) पशु (४) बुद्धियुक्त मानव (५) ईश्वर।

एक ओर निर्जीव प्राणी हैं जो पूर्णरूप से जड़ हैं जिनमें आत्मा जैसे किसी तत्त्व का अस्तित्व नहीं है, दूसरी ओर ईश्वर है जिसे आत्मा कहा जा सकता है।

इन दोनों के मध्य में पेड़-पौधे, पशु पक्षी और मानव जाति है। ईश्वर सर्व व्यापी एवं इन्द्रियातीत है। इसीलिए मन्दिर के प्रांगण में प्रवेश करते समय उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण किया जाता है।

गणेश स्तुति

Shri Ganesha Stuti

Śrī Gaṇeśāya Namaḥ

गजाननं भूतगणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्,
उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।

Gajānanam bhūtagaṇādhisevitam,
Kapitthajambūphalacārubhakṣhaṇam
Umāsutam śokavināśakārakam,
Namāmi Vighneśvarapādapaṅkajam.

Ganesha is the son of Lord Shiva and Goddess Parvati. One legend represents that he sprang from the scurf of Parvati's body. He is the God of wisdom and remover of obstacles; hence he is invariably propitiated at the beginning of any important undertaking. Sindoor, Akṣhata, red flowers are used to perform puja of Shri Ganesha.

गणेश भगवान् शिव और देवी पार्वती के पुत्र हैं। एक कथा के अनुसार वे पार्वती के शरीर से उ रे उवटन से उत्पन्न हुए थे। वे ज्ञान के देवता और विघ्नों को नष्ट करने वाले माने जाते हैं। इसीलिए किसी भी महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रारम्भ में सर्वप्रथम उन्हीं की पूजा की जाती है।

श्रीकार्तिकेय-स्तुति

Shri Kartikeya Stuti

Muruga Stuti

Śrī Kārtikeyaya Namaḥ

मयूरवाहनं वीरं तारकासुरमर्दनम् ।
वन्दे षडाननं देवं कार्तिकेयं शिवात्मजम् ।।

Mayūravāhanam Vīram tarakāsura mardanam
Vande ṣaḍānanam Devam Kārtikeyam Śivātmajam.

Shri Kartikeya also called Shri Muruga is called to achieve victory over our enemies.

Prasad and dhup is necessary while performing his Pooja.

Kartikeya is the son of Lord Śiva. Once when Tārekāsura was terrorizing the devas, they approached Lord Śiva for help. Lord Śiva accepted to the help the gods and He created a son with his divine powers. According to a Saivite purāna, Six sparks of fire came out of the Lord's forehead and Parvati caught hold of them in her arms and They formed a boy with six heads.

When Kartikeya was still very young, he killed the demon Tārakāsura and relieved the devas of their miseries.

Kārtikeya is also known as Muruga, Subrahmanya and Kumāra. He has the pecock as His vehicle.

कार्तिकेय भगवान् शिव के पुत्र है। जब तारकासुर देवताओं को आतंकित कर रहा था, तब वे सहायता के लिए भगवान् शिव के पास पहुँचे। भगवान् शिव ने देवताओं की प्रार्थना सुनी और अपनी दिव्य शक्ति से एक पुत्र उत्पन्न किया। एक शैव पुराण के अनुसार भगवान् शिव के मस्तक से छः अग्निस्फुलिंग प्रस्फुरित हुए जिन्हें पार्वती ने अपनी बाहों में ले लिया और उन्हीं से छः सिर वाले कार्तिकेय का जन्म हुआ।

कार्तिकेय ने अपनी बाल्यावस्था में ही तारकासुर नामक दैत्य का संहार कर देवताओं को सन्तापों से मुक्ति दिलवायी।

कार्तिकेय को मुरुग, सुब्रह्मण्य और कुमार नाम से भी जाना जाता है। इनका वाहन मयूर है।

पार्वती-स्तुति

Parvati Stuti

Pārvatyai Namaḥ

हिमाचलसुतां गौरीं, पार्वतीं शिववल्लभाम् ।
सर्वकल्याणदां दिव्यां पार्वतीं नितरां भजे ॥

Himācala sutām Gaurīm, Pārvatīm Śiva Vallabhām
Sarva Kalyāṇadāṃ Divyām, Pārvatim Nitarām bhaje.

The other name of Maa Parvati is Annapurana which means one who completes all desires and restores contentment in the family.

Maa Parvati is usually worshipped by kumkum, white flower and chandan.

Parvati is the consort of Lord Shiva and she was the daughter of Himavant. In her previous birth, she was the daughter of Prajapati Daksha. But once when Daksha insulted Lord Shiva at a sacrifice in the presence of other devas; Sati threw herself into the sacrificial fire and burnt herself to death.

She was reborn as Parvati and Lord Shiva accepted Her as His consort. She had two children Kartikeya (Muruga) and Ganesha. Shiva and Parvati symbolize Supreme God and His power.

पार्वती भगवान् शिव की अर्धांगिनी मानी जाती है तथा वे हिमालय की पुत्री हैं। अपने पूर्व जन्म में वे प्रजापति दक्ष की पुत्री थीं, लेकिन एक यज्ञ के अवसर पर सभी देवताओं के सम्मुख जब दक्ष ने भगवान शिव की अवहेलना की तब सती यज्ञाग्नि में कूद पड़ी और स्वयं को भस्म कर दिया।

पार्वती के रूप में उनका पुनर्जन्म हुआ और शिव ने उन्हें अर्धांगिनी के रूप में अंगीकार किया। उनके दो पुत्र माने गये हैं— कार्तिकेय (मुरुग) और गणेश। शिव तथा पार्वती परमेश्वर और उस की शक्ति के प्रतीक हैं।

श्रीनन्दीश्वर-स्तुति

Shri Nandeeshwar Stuti

Śrī Nandīśvarāya Namaḥ

महाकायं महावीर्यं (शिववाहनमुत्तमम्),
शिवसन्निधिकारकम्।
गणानां प्रथमं वन्दे नन्दीश्वरमहाबलम् ॥

Mahākāyam Mahāvīryam Śhivavāhanamuttamam
Gaṇānām Prathamam Vande Nandīśvara Mahābalam.

The sacred complex of a temple precinet is dedicated to Nandi. Lord Shiva is always represented as riding a bull (i.e. Nandi). Lord Shiva's control of the bull symbolises his control over the Physical nature. This means that the Physical world and its manifested powers can be brought under control by cultivating the spiritual life. Spiritual powers can outweight the physical ones.

मन्दिर (विशेषत: शिव मन्दिर) प्रांगण का पवित्र स्थल नन्दी को समर्पित होता है। भगवान् शिव को सदा नन्दी (बैल) पर बैठे हुए दिखाया जाता है। बैल पर शिव का नियन्त्रण सम्भवत: इस तथ्य का प्रतीक है कि यह सम्पूर्ण पार्थिव जगत् उन्हीं से नियन्त्रित है। इससे स्पष्ट है कि आध्यात्मिक शक्ति के बल से इस सम्पूर्ण भौतिक जगत् एवं इसकी विविध शक्तियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

श्री शिव स्तुति

Shri Shiva Stuti

Om Namaḥ Śivāya

जल चढ़ाते समय :—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

While offering the water :

Gange ca, Yamune caiva, Godāvari Saraswati
Narmade Sindhu Kāveri, jale 'smin sannidhim Kuru.

आरती के समय :—

कर्पूरगौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानीसहितं नमामि ।।

While performing the arti :

Karpūra Gauram, karuṇāvatāram
Sansārasāram bhujagendra haram
Sadā vasantam Hṛdayāravinde
bhavam bhavānī sahitam Namāmi.

उपासना के समय :—

ओ३म् त्र्यंबकं यजामहे, सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।

While worshipping

Om tryambakam, yajāmahe sugandhim Puṣṭi vardhanam, Ūrvārukamiva bandhanān mṛityor mukṣhīya māmṛtat.

Lord Shiva forms part of the puranic trinity; Brahma being the creater, Vishnu the protector and Shiva the destroyer. He removes the fetters what bind each soul to this material world.

The Linga Purana and the Shiva Purana give 1008 names to Lord Shiva to indicate the many sided and comprehensive nature of his personality_some the names by which He is known are Trilocana (Three-eyed), Nīlakaṇṭha (blue throated), Pañcānana (five faced), Candraśekhara (moon crested), Gangādhara (bearer of the Ganges), Girīśa (Lord of mountain), Jaṭādhara (wearer of matted hair) and Viśvanātha (Lord of the universe).

The Lord is so merciful that He gives to His devotees whatever they ask and never cares as to what would happen to Himself and He is called Bholanath. The cunning and treacherous Bhasmāsura after obtaining boon from Him, wanted to destroy Him. It is because of His merciful nature that Shiva is also called 'Ashutosha' and 'Aughardani'.

Today most of the temples in our island are dedicated to Lord Shiva. Maha Shivaratri festival is the night dedicated to that benevolent Lord. The deyotees observe fast on that occasion and they cffer 'Ganga jal' and 'bilva leaves' to the Lord.

भगवान् शिव पौराणिक त्रिमूर्ति के एक अंश है—ब्रह्मा को सृष्टि-कर्त्ता, विष्णु को सृष्टि पालक एव शिव को संहारक का रूप दिया गया है। भगवान् शिव उन सम्पूण-वन्धनों को नष्ट कर देते हैं, जो जीव को सांसारिक मायाजाल में फँसाते हैं। लिंगपुराण और शिव-पुराण में भगवान् शिव के १००८ नामों का उल्लेख मिलता है जो इनके व्यक्तित्व की विशालता का द्योतक है। उनमें कुछ नाम लिखित है—त्रिलोचन, नीलकण्ठ, पंचानन, चन्द्रशेखर, गंगाधर, गिरीश, जटाधर, और विश्वनाथ।

भगवान् शिव इतने दयालु हैं कि अपने भक्तों पर शीघ्र ही प्रसन्न होकर, जो कुछ भी वे माँगते हैं, उन्हें प्रदान करते हैं इसीलिए उन्हें भोलानाथ कहा जाता है। उनके इस सरल स्वभाव के कारण ही भस्मासुर नामक दैत्य उनसे वरदान प्राप्त कर उन्हीं को नष्ट करने चला था उनकी इस प्रकृति के कारण उन्हें आशुतोष और औघड़दानी भी कहा जाता है।

आज हमारे-देश के प्रायः सभी मन्दिर भगवान् शिव को समर्पित हैं। मह शिवरात्रि का पर्व इस उदारहृदय प्रभु के लिए ही मनाया जाता है। भक्तगण इस दिन उपवास रखते है और शिवलिंग पर गंगाजल और विल्वपत्र चढ़ाते हैं।

श्री विष्णु स्तुति :

Shri Vishnu Stuti

(Śrī Viśṇave Namaḥ)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं, सर्वलोकैकनाथम् ।।

Śāntākarām bhujagaśayanam padmanābham sureśam
Viśvādhāram gaganasadṛśam meghavarṇam śubhāngam
Lakṣhmīkāntam kamalanayanam, yogibhirdhyānagamyam
Vande Vṣṇum bhavabhayaharam, sarvalokaikanātham.

Bhagwan Vishnu always blesses His devotees with joy and peace and he who prays Him, also gets the blessings of His companion Luxmi (wealth).

Bhagwan Vishnu and Luxmi mata should be worshipped with flowers and leaves of Tulsi.

According to the Puranic Triad, Lord Vishnu is the protector of the universe. According to Shrimadbhagavadgita when Right declines and wrong prevails, Lord Vishnu appears on earth in order to destroy the wicked to protect the virtuous and to re-establish Dharma.

The Lord is the sole refuge of the meek and the weak.

Lord Vishu has incarnated Himfelf nine times in the following forms; Matsya (Fish), Kūrma (Tortoise), Vārāha (Pig), Narasimha (Manlion), Vāmana (Dwarf); Paraśurāma (Rama with an axe); Rama, Krishna and Buddha.

The Kalkin incarnation of Lord Vishnu is yet to come. According to the Mahābhārata, Kalkin would be a hero of great manly powers and intelligence.

पौराणिक त्रिदेवतावाद के अनुसार भगवान् विष्णु इस सम्पूर्ण विश्व के संरक्षक हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के साक्ष्य के अनुसार संसार में जब पाप बढ़ता है और धर्म को हानि होती है तब भगवान् विष्णु

धर्म की स्थापना के लिए और अधर्म के विनाश के लिए अवतरित होते है। यही दीन-हीनों की एक मात्र शरण है।

भगवान् विष्णु के नौ अवतार माने गये हैं :- मत्स्यावतार, कूर्मावतार, वाराहावतार, नरसिंहावतार: वामनावतार, परशुरामावतार, रामावतार, कृष्णावतार, और बुद्धावतार।

भगवान् विष्णु का कल्किन् अवतार अभी होना है। महाभारत के अनुसार कल्किन् महान् मानवी शक्ति और बुद्धि का अधिनायक होगा।

श्रीराम स्तुति

Shri Rama Stuti

Śrī Rāmāya Namaḥ

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गम्
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापम्
नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥

Nīlāmbujaśyamala komalāngam
Sītā samāropitavāmabhāgam.
Pāṇau mahāsāyaka cārucāpam
Namāmi Rāmam Raghuvaṁśanātham.

Worship of Shri Rama brings complete salvation and happiness in the family.

Kumkum and akshat-lotions, flowers and pouders are always essential to perform the Rāma Pūjā.

महर्षि वाल्मीकि ने भगवान् राम को एक आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आदर्श राजा एवं दीन-हीनों की एक मात्र शरण के रूप में चित्रित किया है। वह अपने समय के सबसे महान् और शक्तिशाली राजा थे। उन्होंने राक्षसों के आतंक से ऋषियों को मुक्ति दिलाई। रावण के शासन को समाप्त कर लंका की प्रजा को स्वतन्त्र किया। महर्षि वाल्मीकि के अनुसार

रामराज्य में विधवाएँ निराश्रित नहीं थीं। बीमारी और महामारी नाम को भी नहीं थी। कोई भी व्यक्ति भयानक जन्तुओं, लुटेरों अथवा भूख का शिकार नहीं होता था। कोई दुष्ट व्यक्ति किसी कमजोर व्यक्ति को संत्रस्त करने का साहस नहीं कर सकता था। गांधी जी की रामराज्य की संकल्पना भी यही थी।

सीता स्तुति

Sita Stuti

Sītayai Namaḥ

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥

Udbhavasthiti saṁhāra kāriṇīm kleśahāriṇīm
Sarva Śreyaskarīm Śītām nato'ham Rāmavallabhām.

Prayer of Sita mata fiulfills the aspirations of the family with contentments.

Red Roses and Lotions are always admired by Sitamata.

Sita is Tulsidas's concept of an ideal woman. She was 'Ayonijā' (not born of any human agency). This means that she was born without parents and She was the daughter of Earth.

As the devoted wife of Lord Rama, Sita never deserted Him. She gave up her princely clothing and accompanied Lord Rama in the forest. She underwent all types of hardships but She did not utter a single word against it. She remained loyal and devoted Herself to the Lord. In order to prove her purity and chastity, She had even to undergo the fire ordeal (Agnipariksha). In fact she was the symbol of meakness and humility.

वाल्मीकि और तुलसीदास की आदर्श नारी की संकल्पना सीता है। वह अयोनिजा मानी जाती हैं अतः उनके कोई माता

पिता नहीं हैं यह विश्वास किया जाता है। पुराणों के अनुसार पृथ्वी उनकी माता है। जनक द्वारा पालन किये जाने के कारण इन को जानकी कहा जाता है। भगवान् राम की पतिव्रता पत्नी के रूप में उन्होंने राम को कभी अकेला नहीं छोड़ा। वह सम्पूर्ण राजसी सुख सुविधाओं का परित्याग कर वन में भी राम के साथ गई। उन्होंने विविध प्रकार के दुःख झेले लेकिन उसके विरुद्ध कभी एक शब्द भी नहीं कहा। वे सदा भगवान् राम के प्रति समर्पित और निष्ठा युक्त रही। अपनी पवित्रता और सतीत्व को सिद्ध करने के लिए उन्हें अग्नि परीक्षा देने में भी कष्ट नहीं हुआ। वस्तुतः वे विनम्रता और सौम्यभाव की प्रतीक मानी जाती हैं।

श्री हनुमान स्तुति

Hanuman Stuti

Śrī Hanumate Namaḥ

मनोजवम् मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियम् बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यम्, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

Monojavam, Māruta tulya vegam,
Jitendriyum buddhimatām variṣṭham
Vātātmajam vānara-yūthamukhyam.
Śrī Rāma dūtam śaraṇam prapadye.

We pray Shri Vir Hanuman to protect us from all types of miseries, fears and ill habits.

Sindoor, fruits, Prasad (Laddoos) are usually offered to Shri Hanuman.

Mahavira Hanuman is depicted in the Ramayana as a monkey chief. He looks very crude primitive and scientifie, still he is a great devotee of Lord Rama. The latter repeatedly showers blessings upon him. Though Hanuman looks rough externally still he is capable of great moral progress. He is ethically advance and he is capable of loyalty and heroic self sacrifice. He is always at the feet of Lord Rama and he is ready to carry out any of his instructions.

रामायण में महावीर हनुमान को वानरों के नायक के रूप में चित्रित किया गया है। आपाततः वे आदिम और असंस्कृत प्रतीत होते हैं, लेकिन रामभक्त के रूप में वे महान् है। भगवान् राम की उन पर विशेष कृपा रहती है। स्वरूपतः कठोर प्रतीत होने पर भी वे महान नैतिक शक्तियों के स्वामी हैं; नैतिक रूप से अत्यन्त प्रबुद्ध, वफादार एवं राम के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले हैं। वे सदा राम के चरणों में रहते हैं तथा उनके प्रत्येक आदेश का प्रतिपालन करने वाले हैं; साथ ही राम के भक्तों की सम्पूर्ण रूप से रक्षा करते हैं।

श्रीकृष्ण स्तुति

Shri Krishna Stuti

Śrī Kṛṣṇāya Namaḥ

वसुदेवसुतम् देवम् कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दम् कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

Vasudevasutam. Devam Kansacāṇūramardanam
Devakī paramānanadam Kṛṣṇam vande jagadgurum.

Shri Krishna Bhagwan always guides and protects his worshippers and gives satisfaction to one and all.

Worship of Shri Krishna could be done with Tulsi leaves and flowers.

Lord Krishna is the most popular af all the incarnation of Vishnu. His life story is told in the Mahabharata and the Bhagwat Purana. When He was still very young, He killed King Kansa and a lot of other demons who had become terrors of the earth. He also played a great part in the battle of Mahabharata. Though He did not use any weapons, still he was instrumental in the complete annihilation of the Kauravas army, Lord Krishna is also adored as Hrishikesha, i.e. Lord of the senses. This means that He was not a slave of the senses, but he had complete control over them.

It was on the battlefield of Kurukshetra that the Lord gave the massage of Bhagwat Gita to the dejected Arjuna. The latter was unwilling to fight the Kauravas not because he was weak but because he feared that death would put an end to such noble souls as Bhisma and Drona. But the Lord explained to him the eternal philosophy of life. Today the Bhagwat Gita, the lord's song is considered to be the cream of vedic philosophy.

भगवान् विष्णु के विविध अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय श्रीकृष्णावतार है। महाभारत तथा भागवत पुराण में इनके जीवन चरित का विस्तृत विवरण मिलता है। अपनी किशोरावस्था में ही इन्होंने कंस, जो उनके मामा थे, और जरासन्ध आदि अन्य कई दानवों का सहार किया जिनके आतंक से पृथ्वी काँप रही थी। महाभारत के युद्ध में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। श्रीकृष्ण ने यद्यपि युद्ध में अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग नहीं किया तथापि कौरव सेना के समूल उच्छेदन में उन्हीं का प्रमुख योगदान था। भगवान् श्रीकृष्ण को हृषीकेश अर्थात् इन्द्रियों का स्वामी भी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि वे इन्द्रियों के दास नहीं थे, वरन् उन पर उनका पूर्ण आधिपत्य था।

कुरुक्षेत्र की रणभूमि में श्रीकृष्ण ने किंकर्तव्यविमूढ अर्जुन को भगवद्गीता का उपदेश दिया था। युद्ध क्षेत्र में अर्जुन सभी बन्धु-बान्धवों को युद्ध में तत्पर देखकर युद्ध करने में हिचकिचाने लगे, इसलिए नहीं कि वह कमजोर थे वरन् यह सोचकर कि इस युद्ध में भीष्म और द्रोण जैसे पुण्यात्मा पूर्व पुरुष भी मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे, वह मोह को प्राप्त हो युद्ध न करने का संकल्प कर बैठे। लेकिन भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें वास्तविक जीवन-दर्शन का उपदेश दिया जिससे उनका मोह नष्ट हो गया और वह पुनः युद्ध के लिए तत्पर हुए। आज भगवद्गीता को वैदिक दर्शन का निचोड़ माना जाता है।

राधा-स्तुति

Radha Stuti

Rādhayai Namaḥ

श्रीकृष्णचरणाम्भोजद्विरेफां वृषभानुजाम् ।
भवभेदभ्रमोद्बाधां राधाम् आराधयाम्यहम् ।।

Śrī Kṛṣṇa caraṇāmbhoja dvirepham Vṛśabhanujām
Bhava bheda bhramodbādham Rādhām Arādhayāmyaham.

Shri Radha ji always keeps her devotees far from worldly miseries and provides complete devotion and peace to persons.

Chandan is important while praying Radhaji.

दुर्गा-स्तुति

Shri Durga Stuti

Śrī Durgayai Namaḥ

या देवी सर्वभूतेषु, मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।

Yā Devī Sarvabhūteṣu, Māṭṛ Rūpeṇa Saṁsthitā
Namastasyai Namastasyai Namastasyai Namo Namaḥ.

Prayer of Shri Durgamata leads to the purification and enlightenment of our life. Maa Durga is the symbol of bravery and purity and gives us strong will power.

Red flower and sindoor is needed to worship Maa Durga whose another name is Maa Bhawani.

The word 'Durga' is derived from the Sanskrit word 'Durgam' i.e. fort. This means that Durga might have meant to the early people the diety that acted as a barrier against evil.

Durga is also regarded as the consort of Lord Shiva and She is known by many names. Some of the names by which She is familiar are Aṣṭabhujā, Simhavāhinī, Mahiṣā-suramardini, Jagaddhātrī and Kālī.

Durga also symbolises Shakti. It is believed that Lord Shiva without Shakti is powerless. This means that Durga is an integral part of Lord Shiva.

दुर्गा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के दुर्ग शब्द से मानी गयी है। सम्भवत: पुरा काल में इन्हें बुराई के विरुद्ध अवरोधक का कार्य करने वाली देवी के रूप में पूजा जाता होगा।

दुर्गा को भगवान् शिव को अर्द्धांगिनी भी माना जाता है। इन के अनेक नाम हैं जिनमें से कुछ प्रसिद्ध नाम इस प्रकार हैं—अष्टभुजा, सिंहवाहिनी, महिषासुरमर्दिनी, जगद्धात्री और काली।

दुर्गा शक्ति का भी, प्रतीक है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि शक्ति के विना भगवान शिव अशक्त हैं। इसका अर्थ है कि दुर्गा भगवान् शिव की पूरक है।

सरस्वती स्तुति

Saraswati Stuti

Śrī Sarasvatyai Namaḥ

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥

Śāradā Śāradāmbhoja-Vadanā Vadanāmbhuje
Sarvadā sarvadāsmākam sannidhim sannidhim Kriyat.

Saraswati mata is usually worshipped for knowledge, education and for our mental illumination.

White flower is usually presented to Maa Saraswati while performing Pooja.

गंगा-पूजन

Ganga Pujanam

गंगा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।।

Gangā Gangeti yo brūyad yojanānaṁ śatairapi,
mucyate sarvapāpebhyo Viṣṇulokaṁ sa gacchati.

सूर्य-स्तुति

Surya Stuti

Śrī Sūryaya Namaḥ

ग्रहाणामादिरादित्यः लोकरक्षणकारकः ।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः ।।

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।

Grahāṇam ādirātyaḥ lokarakṣaṇa kārakaḥ
Viṣama sthāna sambhūtāṁ pīdam dahatu me raviḥ.

Japākusum-saṁkaśam kāśyapeyam mahādūtim
Tamo'rim sarvapāpaghnam praṇato'smi divākarām.

The sun is the supreme of the Navagraha (9 planets) and its prayer leads to satisfaction and enlightenment.

A full metal pot of water with a flower on it should be presented to Surya Devata.

Best to give Surya Arghya for good health.

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहणार्घ्यम् दिवाकर ।।

Ehi Surya Sahaṣrāṅśo tejorāśe jagatpate
Anukampaya mām bhaktyā Gṛhāṇarghyam Divākara.

सहस्र किरणों वाले !—तेज के भण्डार ! जगत्पति ! सूर्यदेव ! आप हमारे पर कृपा करें और अर्घ्य स्वीकार करें।

सहस्रों किरणों वाले सूर्य अपार तेजवान् हैं और जगत्पति हैं। स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए सूर्य को अर्घ्य देना सर्वोत्तम है।

The Sun god is regarded to be the best visible manifestation of the Supreme. The Sun is regarded as the representative of God. Hindus also believe that there is Shakti in the Sun and it is beyond the understanding of man. In the Īśopaniṣad there is prayer to the Sun.

"Oh! Sun-god.....You are the who lay down yama and niyma, the internal and external disciplines..... O god, let me learn your secret which brings all auspiciousness....."

सूर्य देवता को परमेश्वर की सर्वोत्तम चक्षुर्ग्राह्य अभिव्यंजना माना गया है और उसे परमेश्वर के नेत्र के रूप में स्वीकार किया गया है। सूर्य को देवताओं का प्रतिनिधि तथा चराचर जगत् का आत्मा भी माना गता है। हिन्दूओं का विश्वास है कि सूर्य में ऐसी शक्ति छिपी हुई है जो मनुष्य की बुद्धि से परे है। उपनिषदों में सूर्य की प्रार्थना निम्नलिखित रूप में की गई है 'हे सूर्य देव ! आप ही यम और नियमों का अर्थात् आन्तरिक एवं बाह्य अनुशासनों का निर्धारण करते हैं। हे देव ! मुझ पर अपने रहस्यों का उद्‌घाटन करें जो जो सम्पूर्ण मांगल्य को प्रदान करते हैं।

नवग्रह स्तुति

Navgraha Stuti

Śrī Nava-grahebhyo Namaḥ

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु ॥

Brahmā Murāristripurāntakāriḥ
Bhānuḥ Śaśī bhūmisuto budhaśca
Guruśca Śukraḥ Śani Rāhu Ketavaḥ
Sarve Grahāḥ Śantikarā bhavantu.

Navagraha is worshipped for good health, both mental and physical and it definitely leads to a peaceful life.

Different types of fruits, prasads and water are offered to worship Navagraha.

Usually flags of nine different colours represent the Navagraha.

मन्दिर से प्रत्यावर्तन

Mandir se Pratyavartan

(On leaving the Mandir premises)

नम्रता एवं सरलता के लिए

मंत्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

For simplicity, humility and prosperity.

Mantrahīnam kriyāhīnam, bhaktihīnam Sureśvara
Yatpūjitam mayā deva paripūrṇam tadastu me.

मन्दिर परिक्रमा के समय पाप के नाश एवं ज्ञान प्राप्ति के लिए

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ।।

To be releived from sins and to inherit knowledge.

Yāni kāni ca pāpāni Janmāntarā kṛtani ca
Tani Tani vinaśyanti Pradakṣiṇa Pade Pade

हिन्दुओं के व्रत त्यौहार

भारतीय संवत्सर वैसे ५ प्रकार के होते हैं। मगर यहाँ विषयानुकूल ३ का उल्लेख करना आवश्यक है।

१. सावनः—यह ३६० दिन का होता है। संवत्सर का मोटा हिसाब इसी से लगाया जाता है। इसमें एक मास पूरे ३० दिन का होता है।

२. चान्द्रः—यह सामान्यतया ३५४ दिनों का होता है, अधिकतर महीने इसी संवत्सर के द्वारा जाने जाते हैं। मास वृद्धि होने पर इसमें १३ मास, नहीं तो १२ मास होते हैं। इसमें एक मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अमावस्या तक या कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से पूर्णिमा तक माना जाता है। प्रथम मास को 'अमान्त' तथा द्वितीय को 'पूर्णिमान्त' कहते हैं। दक्षिणी भारत में अमान्त तथा उत्तरी भारत में पूर्णिमान्त मास का प्रचलन है

३. सौरः—यह ३६५ दिन का माना जाता है। यह सूर्य की मेष संक्राति से आरम्भ होकर मेष संक्राति तक ही चलता है। भारतीय व्रतोत्सवों में प्रधानतया चान्द्र संवत्सर का ही प्रयोग किया जाता है।

नव वर्षारम्भ :

भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नये वर्ष का आरम्भ माना जाता है। ब्रह्मपुराण में ऐसा प्रमाण मिलता है कि ब्रह्माजी ने इसी तिथि को (सूर्योदय के समय) सृष्टि-सर्जन किया था। अथर्ववेद तथा 'शतपथ ब्राह्मण' में भी इसका उल्लेख है। 'स्मृतिकौस्तुभकार' के मतानुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र 'के विष्णुकुम्भ योग' में भगवान् ने मत्स्यावतार लिया था। कतिपय विद्वान् भारत के प्रतापी सम्राट् विक्रमादित्य के संवत्सर का यहाँ श्रीगणेश मानते हैं। इस प्रकार पौराणिक तथा ऐतिहासिक दोनों दृष्टियों से इस तिथि का महत्त्व है।

फल तथा विधि—यह व्रत चिर सौभाग्य प्राप्त करने की कामना से किया जाता है। इस व्रत के उपक्रम से वैधव्य दोष नष्ट हो जाता है। इस दिन प्रातः शुद्ध होकर नवीन वस्त्र धारण करके हाथ में गन्ध पुष्प अक्षत तथा जल लेकर संकल्प करना चाहिए। स्वच्छ चौकी पर या बालुका-वेदी

पर शुद्ध श्वेत वस्त्र बिछा कर हल्दी या केशर से रंगे हुए अक्षत का अष्टदल कमल बनाना चाहिए। पुनः वेदी पर ॐ ब्रह्मणे नमः' मंत्र से ब्रह्मा का आवाहन कर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करना चाहिये।

इस दिन नये वर्ष पंचांग का वर्ष फल सुनें एवं गायत्री मन्त्र 'ॐ भूर्भुवः स्वः संवत्सराधिपतिमावाहयामि पूजयामि' का जप कर पूजन करें। इस दिन से रामनवमी के दिन तक दुर्गा-पूजन का विशेष माहात्म्य है।

नवरात्र दुर्गा पूजन :

यह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर राम-नवमी तक चलता है। इन दिनों भगवती दुर्गा तथा कन्या पूजन का बड़ा महत्त्व है। प्रतिपदा के दिन घट-स्थापन तथा जौ बोने की क्रिया भक्तों द्वारा सम्पादित की जाती है। 'दुर्गासप्तशती' के पाठ का भी विधान है। नौ दिन पाठ के अनन्तर हवन तथा ब्राह्मण भोजन कराना वांछनीय है।

राम-नवमी :

मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी को महारानी कौशल्या की कोख से हुआ था। इसलिए यह राम नवमी के नाम से अभिहित की जाती है। पूरे भारतवर्ष के हिन्दू-परिवार में खास तौर पर राम का जन्म महोत्सव मनाया जाता है। प्रत्येक राममन्दिर में भक्तों द्वारा राम का गुण-गान किया जाता है। श्रीराम को पंचामृत में स्नान कराके, धूप, दीप नैवेद्य इत्यादि द्वारा अभ्यर्थना करनी चाहिए।

अक्षय तृतीया :

वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को 'अक्षय तृतीया' के नाम से अभिहित किया गया है। इस दिन किये गए होम, जप, तप, स्नान, आदि अक्षय रहते हैं। ऐसी मान्यता है। यह तिथि 'परशुराम-तीज भी कही जाती है। त्रेतायुग का आरम्भ भी इसी तिथि से हुआ है। इस दिन गंगा स्नान का बड़ा भारी माहात्म्य है। इस दिन स्वर्गीय आत्माओं की प्रसन्नता के लिए कलश, पंखा, खड़ाऊँ, छाता, सत्तू, ककड़ी, खरबूजा आदि फल, शक्कर आदि पदार्थ को दान करना चाहिए। इसी दिन चारों धामों में उल्लेखनीय बदरीनारायण के दरवाजे खुलते हैं। इस दिन भक्तजनों को श्री बदरीनारायण जी का चित्र सिंहासन पर

रख के मिश्री तथा चने की भीगी दाल से भोग लगाना चाहिए। इस दिन गंगा-स्नान और भगवान् श्रीकृष्ण को चन्दन चढ़ाने का विशेष माहात्म्य है।

वट सावित्री पूजन :

ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को यह व्रत मनाया जाता है। इस दिन सत्यवान् सावित्री की यमराज सहित पूजा की जाती है। तत्पश्चात् फल का भक्षण करना चाहिए। यह व्रत रखने वाली स्त्रियों का सुहाग अचल होता है। सावित्री ने इसी व्रत के प्रभाव से अपने मृतक पति सत्यवान् को धर्मराज से जीत लिया था।

स्वर्ण या मिट्टी से सावित्री सत्यवान् तथा भैंसे पर सवार यमराज की प्रतिमा बनाकर धूप, चन्दन, दीपक, फल, रोली, केसर से पूजन करना चाहिए तथा सावित्री-सत्यवान् की कथा सुननी चाहिए।

गंगा दशहरा :

जैसा कि 'वाराह-पुराण' में कहा गया है—

'दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि।
अवतीर्णा यतः स्वर्गात् हस्तार्क्षे च सरिद्वरा॥

ज्येष्ठ सुदी दशमी को गंगा-दशहरा कहा जाता है। स्कन्दपुराण, वाल्मीकिरामायण आदि ग्रन्थों में गंगा अवतरण की कथा वर्णित है। इसी दिन नदियों में श्रेष्ठ गंगा जी भगीरथ द्वारा आराधित होकर स्वर्गलोक से पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई थी।

यह दिन संवत्सर का मुख माना गया है। इसीलिए गंगा-स्नान करके दूध, बताशा, जल-रोली, नारियल, धूप-दीप से पूजन करके दान देना चाहिए। इस दिन गंगा शिव, ब्रह्मा, सूर्य, भागीरथी तथा हिमालय की मूर्ति बना कर पूजन करने से विशेष फल होता है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को सोमवार तथा हस्त नक्षत्र होने पर यह तिथि घोर पापों को नष्ट करने वाली मानी गई है। हस्त नक्षत्र में बुधवार के दिन गंगावतरण हुआ था। इसीलिए यह तिथि अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस तिथि में स्नान-दान-तर्पण से दश पापों का विनाश होता है। इसलिए इसका नाम दशहरा पड़ा है।

गुरु पूर्णिमा :

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा 'गुरु-पूर्णिमा' या 'व्यास-पूर्णिमा' कहलाती

है। प्राचीन काल में विद्यार्थी जब गुरु-कुलों में निःशुल्क शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करते थे तो प्रति वर्ष इस तिथि को गुरु-पूजन तथा दान-दक्षिणा दिया करते थे। इसीलिए इस दिन गुरु-पूजन होता है। प्रातःकाल स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर गुरु के पास जाना चाहिए तथा उन्हें उच्चासन पर बैठा कर माल्यार्पण करना चाहिए। यथाशक्ति द्रव्य, फल, पुष्प, वस्त्र आदि दान करना चाहिए। इससे गुरु कृपा से विद्या आती है। गुरु महिमा पर अनेक प्राचीन कवियों ने अपने विविध मत व्यक्त किये हैं यथा—

तुलसी : गुरु बिन होय न ज्ञान।

कबीर : कबिरा ते नर अंध है, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर॥

अज्ञात : गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

हल षष्ठी :

यह व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष षष्ठी को किया जाता है। इसी दिन हल-मूसल धारी श्री बलराम जी का जन्म हुआ था। कुछ लोग जनकनंदिनी माता सीता का भी जन्म दिवस इसी तिथि को मनाते हैं। बलराम जी के मुख्य शस्त्रों में हल तथा मूसल विशेष उल्लेखनीय हैं, इसी से इनका नाम हलधर भी पड़ा होगा। प्रधानतया पुत्रवती स्त्रियाँ ही यह व्रत करती हैं। इस दिन महुए की दातुन करने का विधान है। पारण के समय हल से जोता बोया जाता है।

अन्न नहीं खाना चाहिए। इस कारण इस व्रत का सेवन करने वाली स्त्रियाँ नीवार (फसही) का चावल सेवन करती हैं। इस दिन गाय का दूध भी वर्जित है।

विधि विधान में प्रातः सद्यःस्नाता स्त्रियाँ भूमि (आँगन) लीप कर एक जल-कुण्ड बनाती हैं जिसमें बेर, पलाश, गूलर, कुश, प्रभृति की टहनियाँ गाड़ कर ललही की पूजा करती हैं। पजन में सतनजा (गेहूं, चना, मक्का, धान, अरहर, ज्वार, बाजरे) आदि का भुना हुआ लावा चढ़ाया जाता है। हल्दी से रँगा हुआ वस्त्र तथा कुछ सुहाग-सामग्री भी चढ़ाई जाती है। पूजनोपरान्त निम्न मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए :

गंगाद्वारे कुशावर्ते विल्वके नीलपर्वते ।
स्नात्वा कनखले देवि हर लब्धवते पतिम् ।
ललिते सुभगे देवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
अनन्तं देहि सौभाग्यं महा तुभ्यं नमो नमः ।।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी :

भाद्रपद कृष्णाष्टमी को जन्माष्टमी उत्सव मनाया जाता है । इसी तिथि को श्रीकृष्ण का मथुरा नगरी में असुरराज कंस के कारागार में जन्म हुआ था । इस दिन कृष्ण जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में मन्दिरों में जगह-जगह कीर्तन तथा झाँकियाँ सजाई जाती हैं । बारह बजे रात्रि तक व्रत रह कर भगवान् का प्रसाद लिया जाता है । दूसरे प्रात: ही इसी उपलक्ष्य में नन्द महोत्सव भी मनाया जाता है । भगवान् के ऊपर हल्दी, दही, घी, तेल, आदि छिड़क कर आनन्द से पालने में झुलाया जाता है । इस दिन भागवत, श्रीकृष्ण-कौतुभ आदि ग्रन्थों से कृष्ण जन्म की कथा सुननी चाहिए । जन्माष्टमी के दिन उपवास करने से मनुष्य सात जन्मों के पापों से छुट जाता हैं । २ धर्मशास्त्रों में पलंग पर देवकी के सहित कृष्ण के पूजन का विधान बताया जाता है ।

गणेश चतुर्थी :

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चौथ को गणेश चतुर्थी का व्रत किया जाता । प्रात: गणेश जी की मृत्तिका मूर्ति बना कर श्रद्धावनत हो पूजा करनी चाहिए । पूजन के समय मोदक का भोग लगा कर हरित दूर्वा के २१ अकुर लेकर उनमें दो दो करके इन दस नामों पर क्रमश: चढ़ाना चाहिए ।

१-गणाधिप: २-गौरा सुमन ३-अघनाशक ४-एकदन्त ५-ईशपुत्र ६-सर्वसिद्धि ७-विनायक भगवन्त ८-कुमारगुरु ९-इभवक्त्र १० मूषकवाहन सन्त ।

करहु कृपा मुझ दास पर, पाप के भार अनन्त ।।

तत्पश्चात् दस लड्डू ब्राह्मणों को दान देकर दस लडडू स्वयं खाना चाहिए ।

अनन्त चतुर्दशी :

भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को शेष शैय्या पर क्षीर सागर में सोने वाले विष्णु भगवान् की पूजा की जाती है । और पूजा के अन्त में निम्न मन्त्र :—

'अनन्तः सर्वनागानामधिपः सर्वकामदः। सदा भूयात् प्रसन्नो मे भक्तानामभयंकरः॥' से प्रार्थना करनी चाहिए। यह विष्णु कृष्ण रूप है और शेषनाग काल रूप से विद्यमान रहते हैं। अतः दोनों की सम्मिलित पूजा की जाती है।

इन्दिरा एकादशी :

आश्विन कृष्ण पक्ष की एकादशी इन्दिरा एकादशी कहलाती है। इस दिन शालिग्राम की पूजा करनी चाहिए। पवित्र होकर शालिग्राम को पंचामृत से स्नान कराकर वस्त्र पहनावे, भोग लगावे तथा पूजा आरती आदि करें। पंचामृत वितरण कर ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दें।

मातृनवमी :

आश्विन कृष्ण पक्ष नवमी को 'मातृनवमी' कहा जाता है। जिसमें पुत्र अपने पिता पितामह आदि पूर्वजों के निमित्त पितृपक्ष में तर्पण करते हैं। उसी प्रकार से सद्गृहस्थों की पुत्रवधुएँ भी अपनी दिवंगता सास माता आदि के निमित्त पितृपक्ष की प्रतिपदा से लेकर नवमी तक तर्पण कार्य करती हैं। नवमी के दिन दिवगंत मां तथा सास की आत्म शान्ति के लिए ब्राह्मणों को दानादि देती हैं।

मातृनवमी को ही माता के श्राद्ध का शास्त्रीय विधान है। इस तिथि को सधवा अथवा पुत्रवती स्त्रियों को भोजन कराना पुण्यदायी माना गया है।

नवरात्रारम्भ :

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक यह व्रत माना जाता है। प्रतिपदा के दिन प्रातः अभ्यंग स्नानादि करके संकल्प करें तथा स्वयं या पण्डितों के द्वारा मिट्टी की वेदी बना कर जौ बोना चाहिए। उसी पर घट स्थापित करें। घट के ऊपर कुलदेवी की प्रतिमा स्थापित कर उसका पूजन करें तथा दुर्गा सप्तशती का पाठ करावे। पाठ पूजन के समय दीप अखण्ड जलता रहना चाहिए। वैष्णव लोग राम की मूर्ति स्थापित कर रामायण का पाठ करते हैं। कहीं नवरात्र भर राम की लीला भी हुआ करती है।

दुर्गाष्टमी :

यह त्यौहार आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी को आता है। इस दिन दुर्गा देवी की पूजा की जाती है : इस दिन दुर्गा देवी को पूर्ण आहुति दी जाती

है। भगवती दुर्गा को उबाले हुए चने, हलुआ, पूड़ी, खीर, पूआ, आदि का भोग लगाया जाता है। बहुत से व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के लिए हवन आदि भी करते हैं। जहाँ शक्ति को अधिक मान्यता दी जाती हैं वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कन्या लांगूरा जिमावे। देवी की जोत करे। चित्र के अनुसार देवी जी बना कर समस्त सामग्री से पूजा करे।

दशहरा विजयादशमी :

यह पर्व आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को मनाया जाता है। भगवान् राम ने इस दिन लंका पर चढ़ाई करके रावण पर विजय प्राप्त की थी। इस दिन राजघरानों में अस्त्र-शस्त्र शमी-पूजन तथा सीमा उल्लंघन का विधान है। इस दिन नीलकण्ठ का दर्शन शुभदायी माना जाता है।

शरद पूर्णिमा :

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को 'शरद-पूर्णिमा' कहा जाता है। धर्म शास्त्रों में इस दिन 'कोजागर' व्रत माना गया है। इसी को कौमुदी-व्रत भी कहते हैं। रासोत्सव का यह दिन वास्तव में भगवान् कृष्ण ने जगत् की भलाई के लिये निर्धारित किया है। क्यों कि कहा जाता है इस रात्रि को चन्द्रमा की किरणों से सुधा झरती है। इस दिन मन्दिर में विशेष सेवा पूजन किया जाता है। भगवान् के रात्रि नैवेद्य के लिए खीर अथवा दूध होना चाहिए। चाँदनी में भगवान् को विराजमान करें और शृंगार सज्जा श्वेत वस्त्रों से करके दर्शन करें।

शरद् ऋतु में मनुष्यों को पित्त भी उत्पन्न होता है। चरक संहिता में लिखा है :

वर्षाशीतोचितांगाना सहसैवार्करश्मिभिः।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति॥

वर्षा से ही शरीर शीत सहन में सक्षम रहता है। वे जब शरत्कालीन सूर्य की तप्त किरणों से संतप्त होते हैं तो इकट्ठा पित्त अवश्य ही दूषित हो जाता है। इससे इस दोष को नष्ट करने वाली शरद पूर्णिमा की चन्द्र किरणें हैं। भावप्रकाश का कथन है कि—

ज्योत्स्ना शीता स्मरानन्दप्रदा तृटपित्तदाहनुत्।

अर्थात् चाँदनी शीतल होती है, कामानन्द देने वाली और प्यास पित्त तथा दाह को निवृत्त करने वाली होती है।

शरद् पूर्णिमा से ही स्नान और व्रत प्रारम्भ हो जाता है। माताएँ अपनी सन्तान की मंगल कामना से देवी-देवताओं का पूजन करती है। इस दिन चन्द्रमा पृथ्वी के अत्यन्त समीप आ जाता है इससे अमृतेच्छु को चाहिए कि रात्रि में खीर घी, आदि बाहर रख कर दूसरे दिन प्रातः खाये। दिन रहे किसी पवित्र पीढ़े पर एक लोटा शुद्ध जल रख कर पास में एक गिलास में गेहूं रखे तथा दोनों पात्रों की रोली से पूजा करें और दक्षिणा चढ़ावें। फिर तेरह दाने गेहूं लेकर कथा श्रवण करें।

करवा चौथ :

यह कार्तिक कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी चौथ में किया जाता है। यह स्त्रियों का मुख्य त्यौहार है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ स्वपति के रक्षार्थ यह व्रत करती है तथा रात्रि में सुहाग की वस्तुओं की पूजा करती है। पहले चन्द्रमा, उसके नीचे शिव तथा कार्तिकेय आदि के चित्र दिवाल पर पिसे ऐपन से बनाना चाहिए। इस दिन निर्जल व्रत करे। चन्द्र अर्घ्य देकर भोजन करना चाहिए। पीली मिट्टी की गौरा बनानी चाहिए। कोई-कोई स्त्रियाँ परस्पर चीनी या मिट्टी का करवा चौथ आदान-प्रदान करती हैं।

गणेश जी (विन्दायक जी) की कथा :

एक अन्धी बुढ़िया थी। जिसके एक लड़का व एक लड़के की बहू थी। घर बहुत गरीब था। वह हमेशा गणेश जी की पूजा करती थी। गणेश जी उस बुढ़िया से कहते हैं कि 'बुढ़िया मां, तू जो चाहे माँग ले' बुढ़िया कहती है कि 'मुझे माँगना नहीं आता। कैसे और क्या माँगू ?'

तब गणेश जी कहते हैं कि—'अपने बहू-बेटे से पूँछ कर माँग लें। तब बुढ़िया ने बेटे से पूछा कि 'गणेश जी कहते हैं कि तू कुछ माँग लें, बता क्या माँगू' बेटे ने कहा —'धन माँग ले।' बहू से पूछा तो बहू ने कहा-'नाती माँग लो।'

तब बुढ़िया ने सोचा कि ये तो अपने-अपने मतलब की चीज ही कह रहे हैं। अतः उस बुढ़िया ने पड़ोसिनों से पूछा तो पड़ोसिनों ने कहा कि 'बुढ़िया. तू तो थोड़े दिन जीवेगी। क्यों तू धन माँगे और क्यों तू नाती माँगे। तू तो आँख माँग ले, जिससे तेरी जिन्दगी आराम से कट जाए।' उस बुढ़िया ने

है। भगवती दुर्गा को उबाले हुए चने, हलुआ, पूड़ी, खीर, पूआ, आदि का भोग लगाया जाता है। बहुत से व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के लिए हवन आदि भी करते हैं। जहाँ शक्ति को अधिक मान्यता दी जाती हैं वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कन्या लांगूरा जिमावे। देवी की जोत करे। चित्र के अनुसार देवी जी बना कर समस्त सामग्री से पूजा करे।

दशहरा विजयादशमी :

यह पर्व आश्विन शुक्ल पक्ष दशमी को मनाया जाता है। भगवान् राम ने इस दिन लंका पर चढ़ाई करके रावण पर विजय प्राप्त की थी। इस दिन राजघरानों में अस्त्र-शस्त्र शमी-पूजन तथा सीमा उल्लंघन का विधान है। इस दिन नीलकण्ठ का दर्शन शुभदायी माना जाता है।

शरद पूर्णिमा :

आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को 'शरद-पूर्णिमा' कहा जाता है। धर्म शास्त्रों में इस दिन 'कोजागर' व्रत माना गया है। इसी को कौमुदी-व्रत भी कहते हैं। रासोत्सव का यह दिन वास्तव में भगवान् कृष्ण ने जगत् की भलाई के लिये निर्धारित किया है। क्यों कि कहा जाता है इस रात्रि को चन्द्रमा की किरणों से सुधा झरती है। इस दिन मन्दिर में विशेष सेवा पूजन किया जाता है। भगवान् के रात्रि नैवेद्य के लिए खीर अथवा दूध होना चाहिए। चाँदनी में भगवान् को विराजमान करें और शृंगार सज्जा श्वेत वस्त्रों से करके दर्शन करें।

शरद् ऋतु में मनुष्यों को पित्त भी उत्पन्न होता है। चरक संहिता में लिखा है :

वर्षाशीतोचितांगाना सहसैवार्करश्मिभिः।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति॥

वर्षा से ही शरीर शीत सहन में सक्षम रहता है। वे जब शरत्कालीन सूर्य की तप्त किरणों से संतप्त होते हैं तो इकट्ठा पित्त अवश्य ही दूषित हो जाता है। इससे इस दोष को नष्ट करने वाली शरद पूर्णिमा की चन्द्र किरणें हैं। भावप्रकाश का कथन है कि—

ज्योत्स्ना शीता स्मरानन्दप्रदा तृटपित्तदाहनुत्।

अर्थात् चाँदनी शीतल होती है, कामानन्द देने वाली और प्यास पित्त तथा दाह को निवृत्त करने वाली होती है।

शरद् पूर्णिमा से ही स्नान और व्रत प्रारम्भ हो जाता है। माताएँ अपनी सन्तान की मंगल कामना से देवी-देवताओं का पूजन करती है। इस दिन चन्द्रमा पृथ्वी के अत्यन्त समीप आ जाता है इससे अमृतेच्छु को चाहिए कि रात्रि में खीर घी, आदि बाहर रख कर दूसरे दिन प्रातः खाये। दिन रहे किसी पवित्र पीढ़े पर एक लोटा शुद्ध जल रख कर पास में एक गिलास में गेहूं रखे तथा दोनों पात्रों की रोली से पूजा करें और दक्षिणा चढ़ावें। फिर तेरह दाने गेहूं लेकर कथा श्रवण करें।

करवा चौथ :

यह कार्तिक कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी चौथ में किया जाता है। यह स्त्रियों का मुख्य त्यौहार है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ स्वपति के रक्षार्थ यह व्रत करती है तथा रात्रि में सुहाग की वस्तुओं की पूजा करती है। पहले चन्द्रमा, उसके नीचे शिव तथा कार्तिकेय आदि के चित्र दिवाल पर पिसे ऐपन से बनाना चाहिए। इस दिन निर्जल व्रत करे। चन्द्र अर्घ्य देकर भोजन करना चाहिए। पीली मिट्टी की गौरा बनानी चाहिए। कोई-कोई स्त्रियाँ परस्पर चीनी या मिट्टी का करवा चौथ आदान-प्रदान करती हैं।

गणेश जी (विन्दायक जी) की कथा :

एक अन्धी बुढ़िया थी। जिसके एक लड़का व एक लड़के की बहू थी। घर बहुत गरीब था। वह हमेशा गणेश जी की पूजा करती थी। गणेश जी उस बुढ़िया से कहते हैं कि 'बुढ़िया मां, तू जो चाहे माँग ले' बुढ़िया कहती है कि 'मुझे माँगना नहीं आता। कैसे और क्या माँगू ?'

तब गणेश जी कहते हैं कि—'अपने बहू-बेटे से पूँछ कर माँग ले। तब बुढ़िया ने बेटे से पूछा कि 'गणेश जी कहते हैं कि तू कुछ माँग लें, बता क्या माँगू' बेटे ने कहा —'धन माँग ले।' बहू से पूछा तो बहू ने कहा-'नाती माँग लो।'

तब बुढ़िया ने सोचा कि ये तो अपने-अपने मतलब की चीज ही कह रहे हैं। अतः उस बुढ़िया ने पड़ोसिनों से पूछा तो पड़ोसिनों ने कहा कि 'बुढ़िया, तू तो थोड़े दिन जीवेगी। क्यों तू धन माँगे और क्यों तू नाती माँगे। तू तो आँख माँग ले, जिससे तेरी जिन्दगी आराम से कट जाए।' उस बुढ़िया ने

पड़ौसिनों की भी न मानी और घर जाकर सोचा कि 'जिससे बेटा-बहू राजी हों वह भी माँग लूँ और अपने मतलब की चीज भी मांग लूँ।'

जब दूसरे दिन गणेश जी आये तो बोले-'बुढ़िया जो चाहे माँग ले।' बुढ़िया बोली-'यदि आप प्रसन्न हैं तो नौ करोड़ की माया दें, निरोगी काया दें, अमर सुहाग दें, आँखों की रोशनी दें, नाती दें, पोता दें और सब परिवार को सुख द और अन्त में मोक्ष दें।' तब गणेश जी बोले-'बुढ़िया माँ, तूने तो मुझे ठग लिया। खैर जो तूने माँगा है वह सब तुझे मिलेगा।'

यह कह कर गणेश जी अन्तर्ध्यान हो गए। बुढ़िया माँ को माँगे अनुसार सब कुछ मिल गया। हे गणेश जी महाराज, जैसे तुमने उस बुढ़िया को सब कुछ दिया वैसे सब को देना।

धन तेरस :

यह त्यौहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। यह कार्तिक मास कृष्ण पक्ष १३ त्रयोदशी को मनाया जाता है। इसी दिन से लोग घरों की लिपाई पुताई प्रारम्भ कर देते हैं। कोई-कोई दीप-दान भी करते हैं। इस दिन कोई किसी को अपनी वस्तु उधार नहीं देता। इसके उपलक्ष्य में बाजारों से नये वस्त्र, आभूषण आदि भी खरीदे जाते हैं। इसी दिन घर में लक्ष्मी का आवास मानते हैं। इस दिन ही धन्वन्तरि वैद्य समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। इसलिए धनतेरस को धनवन्तरि-जयन्ती भी कहते हैं।

दीपावली

कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या को यह दीपोत्सव का त्यौहार मनाया जाता है। भारत के ४ राष्ट्रीय त्यौहारों में यह अपना विशिष्ट स्थान रखता है। भारतीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक आराधना, उपासना व अर्चना में आधिभौतिक आध्यात्मिक और आधिदैविक इन तीनों रूपों का समन्वित व्यवहार होता हैं। इस मान्यतानुसार इस उत्सव में भी सोने चाँदी सिक्के आदि रूप के आधिभौतिक लक्ष्मी का आधिदैविक लक्ष्मी से सम्बन्ध स्वीकार करके पूजन किया जाता है। घरों का सम्मार्जन उपलेपन (कलई आदि से पोतना) प्रभृति-परिष्कार (सजावट) और दीप माला आदि से अलंकृत करना इत्यादि कार्य लक्ष्मी के आध्यात्मिक स्वरूप शोभा को आविर्भूत करने के लिए किए जाते हैं। इस तरह इस उत्सव में उपर्युक्त तीनों प्रकार से लक्ष्मी की उपासना हो जाती है। इस दिन प्रमुखतया लक्ष्मी तथा गणेश जी की पूजा की जाती है। घरों में असंख्य दीपक जलाये जाते हैं।

भैया दूज

यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को मनाया जाता है। यह भाई बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन भाई बहन के साथ-साथ यमुना स्नान करना तिलक लगवाना तथा बहिन के घर भोजन करना अति फलदायी होता है। इस दिन बहन भाई की पूजा कर उसके दीर्घायु तथा अपने सुहाग की कामना कर हाथ जोड़ यमराज से प्रार्थना करती हैं। इसीलिए इसे यम-द्वितीया भी कहते हैं। इस दिन श्रद्धानत भाई को स्वर्ण, वस्त्र, मुद्रा आदि बहन को देना चाहिये।

देवोत्थान एकादशी

कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को देवोत्थान या देवठान, एकादशी होता है। इस दिन घर की सफाई कर आँगन अथवा ओखली में दिये अनुसार एक चित्र बनाया जाता है। तत्पश्चात् पकवान, फल, सिंघाड़ा, गन्ना आदि अर्पित कर डलिया से ढक दिया जाता है। एक दीपक रात्रि भर जलते रहना चाहिये। इसके सम्बन्ध में एक किंवदन्ती यह है कि भाद्रपद की एकादशी को ही भगवान् विष्णु ने शंखासुर नामक राक्षक को मारकर भारी थकावट से शयन कर कार्तिक शुक्ल एकादशी को नयन उन्मीलित किये थे। इस तिथि के बाद ही शादी-विवाह आदि शुभ कार्य होने शुरू हो जाते हैं।

तुलसी विवाह

कार्तिक मास शुक्ल पक्ष एकादशी को कार्तिक स्नान करने वाली स्त्रियाँ तुलसी जी तथा शालिग्राम का विवाह करते हैं। समस्त विवाह को विधि विधान से खूब गाजे बाजे के साथ तुलसी के बिरवे से शालिग्राम के फेरे एक सुन्दर मण्डप के नीचे डाले जाते हैं। विवाह में गीत तथा भजन गाने की प्रथा है।

मगन भई तुलसी राम गुण गाइ के। मगन भइ तुलसी—
सब कोऊ चाले डोली, पालकी रथ जुरवाइ के।
साधू चालें पां पां पैया, चेंटी सौ बचाइके।
मगन भई तुलसी राम गुण गाइ के॥

महाशिवरात्रि व्रत

फाल्गुण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को शिव रात्रि महोत्सव मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक वार भोजन करके चतुर्दशी के दिन भर अन्न नहीं ग्रहण करना चाहिए। काले तिलों से स्नान करके रात्रि में विधिवत् शिव-पूजन करना चाहिये। शिव जी के सबसे प्रिय पुष्पों में मदार, कनेर, वेलपत्र, मौलसरी हैं किन्तु पूजन विधान में वेल पत्र सबसे प्रमुख है। शिव जी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है।

शिवलिंग पर चढ़ाये गये पुष्प, फल तथा जल को नहीं ग्रहण करना चाहिये। ब्रह्मा की तीन शक्तियों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश का नाम उल्लेखनीय है। इन्हीं शक्तियों में एक रुलाने के कारण रुद्र तथा दूसरा जगत् का कल्याण करने के कारण शिव के नाम से अभिहित किया गया है।

मुद्रक : प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस, उत्तम नगर, नई दिल्ली-११००५९

देववाणी-परिषदा प्रकाशिताः ग्रन्थाः

१.	कर्णभूषणम् (डा० सी० आर० स्वामिनाथन्)	रु० ५.००
२.	श्रीबदरीशसुप्रभातम् (,, ,,)	रु० १०.००
३.	श्रीपादसप्ततिः (श्रीपादपराग-व्याख्या) (,,)	रु० ४०.००
४.	श्रीकृष्णचरितम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० ३०.००
५	सुगमरामायणम् (,, ,,)	रु० ३५.००
६	श्रीमदप्पयदीक्षितचरितम् (डा० हरिनारायण दीक्षितः)	रु० २०.००
७.	भारतस्वातन्त्र्यसंग्रामेतिहासः (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० ३५.००
८	सदाशयसमुच्चयः (पं० टी० वी० परमेश्वर अय्यरः)	रु० १५.००
९.	आभाणकमञ्जरी (,, ,,)	रु० १५.००
१०.	मेघदूत : एक विश्लेषण (डा० देवीदत्त शर्मा)	रु० २०.००
११.	रघुवंश : एक विश्लेषण (,, ,,)	रु० २०.००
१२.	अभिज्ञानशाकुन्तल : एक विश्लेषण (,,)	रु० २०.००
१३.	कालिदास की कला और संस्कृति (भाग २) (,,)	रु० ६०.००
१४.	जय भारतभूमे ! (काव्यम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० ३०.००
१५	अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यपरिचयः (प्रथम खण्डः) (,,)	रु० ३०.००
१६.	राधाकृष्णरसायनम् (श्री ओट्टूर उण्णि नम्बूदिरीपादः)	रु० ४०.००
१७.	अभिनवहनुमन्नाटकम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० २०.००
१८.	भट्टनायक और अभिनवगुप्त की साधारणीकरण-विषयक अवधारणा (डा० सुलेखचन्द्र शर्मा)	रु० ५०.००
१९.	अभिनवोत्तर संस्कृत काव्यशास्त्र में साधारणीकरण-विमर्श (डा० सुलेखचन्द्र शर्मा)	रु० ५०.००
२०.	साधारणीकरण : प्राच्य और प्रतीच्य चिन्तन : (डा० सुलेखचन्द्र शर्मा)	रु० ५०.००
२१.	भाति मे भारतम् (काव्यम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० ४०.००
२२.	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना (भाग १) (डा० हरिनारायण दीक्षित)	रु० ५०.००
२३.	संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना (भाग २)	रु० ७०.००
२४.	,, ,, ,, (भाग ३)	रु० ५०.००
२५	(सम्पूर्णग्रन्थः एकस्मिन् पुटबन्धे)	रु० १५०.००
२६.	साहित्यकौतुकम् (काव्यम्) (पं० टी०वी० परमेश्वर अय्यरः)	रु० ४०.००
२७.	पूर्णकुम्भः (ललितनिबन्धसंग्रहः) (पं० विष्णुकान्त शुक्लः)	रु० २० ००
२८.	स्फूर्तिसप्तशती (डा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी)	रु० ३०.००
२९.	रसदर्शनम् (डा० रमेशचन्द्र शुक्लः)	रु० ५०.००
३०.	श्रीबदरीशतरङ्गिणी (काव्यम्) श्रीसुन्दरराजः	रु० २०.००
३१.	सुरश्मिकाश्मीरम् (,,) (,,)	रु० २०.००
३२.	पुरश्चरणकमलम् (नाटकम्) (डा०रमाकान्त शुक्लः)	रु० १०.००
३३.	श्रीउच्छिष्टमहागणपतिकल्पः (डा०सी०आर० स्वामिनाथन्)	रु० ८.००
३४.	पण्डितराजीयम् नाटकम्) (डा० रमाकान्त शुक्लः)	रु० २०.००

वितरकः : देववाणी-प्रकाशनम्, ६ वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५८